आर्थिक विकास की अवस्थाएं
(Stages of Economic Growth)

विश्व के विभिन्न देशों में आर्थिक विकास की गति और प्रक्रिया में पर्याप्त अन्तर रहा है। अर्थशास्त्रियों ने आर्थिक विकास के ऐतिहासिक क्रम को विभिन्न अवस्थाओं में विभक्त करने का प्रयत्न किया है। इस सम्बन्ध में प्रो. रोस्टो का योगदान विशेष रूप से उल्लेखनीय है। आर्थिक विकास की अवस्थाओं को निम्न श्रेणियों में विभक्त किया जा सकता है—

(1) परम्परागत समाज की स्थिति (Stage of Traditional Society),
(2) स्वयं-स्फूर्त-विकास से पूर्व की स्थिति (Stage of Pre-condition of take-off),
(3) स्वयं-स्फूर्त की स्थिति (Stage of take-off),
(4) परिपक्वता की स्थिति (Stage of Maturity), एवं
(5) उच्च-स्तरीय उपभोगों की अवस्था (Stage of Mass-consumption).

1. परम्परागत समाज की स्थिति—प्रो. रोस्टो के अनुसार, "परम्परागत समाज से आशय एक ऐसे समाज से है जिसका ढाँचा समिति उत्पादन कार्यों के अन्तर्गत विज्ञान, प्रविधि एवं भौतिक विश्व की न्यूटन के पूर्व की स्थिति के आधार

Scanned by CamScanner

पर विकसित हुआ है।" परम्परागत समाज में साधारणतः कृषि और उद्योगों में परम्परागत तरीकों से कार्य किया जाता है। यन्त्रों, विशेषकर शक्ति-चालित यन्त्रों का सामान्यतः उपयोग नहीं किया जाता। उद्योग अत्यन्त अविकसित अवस्था मे पाए जाते हैं और सीमित उत्पादन होने के कारण विनिमय व्यवस्था भी सीमित रहती है। परम्परागत समाज में राजनीतिक सत्ता प्रायः भू-स्वामियों के हाथ में केन्द्रित होती है। अपनी भूमि की उपज के बल पर ही यह वर्ग आर्थिक शक्ति हथिया कर समाज के अन्य वर्गों पर शासन करने लगता है। कहीं-कहीं उद्योग और कृषि में नवीन पद्धतियाँ दिखाई देती हैं, किन्तु मूलतः सम्पूर्ण आर्थिक व्यवस्था अविकसित स्थिति में पाई जाती है।

2. स्वयं-स्फूर्त-विकास से पूर्व की स्थिति—रोस्टो ने इसे विकास की दूसरी अवस्था माना है। यह अवस्था वस्तुतः स्वयं-स्फूर्त-अवस्था (Stage of Take-off) की भूमिका (Prelude) मात्र है। इससे एक ऐसे समाज का बोध होता है जिसमें परिवर्तन होने प्रारम्भ हो जाते हैं और समाज परम्परागत स्थिति से निकलकर द्वितीय अवस्था की ओर अग्रसर होने लगता है। समाज को इतनी सुविधाएँ मिलना शुरू हो जाती हैं कि वह आधुनिक वैज्ञानिक पद्धतियों को अपना सके, नवीन तकनीकों का उपयोग कर सके तथा इनके आधार पर अपने विकास की गति में तेजी ला सके। साराँशतः में, जब परम्परागत समाज में पुराने मूल्यों के स्थान पर नवीन वातावरण को प्रस्थापित करने के प्रयास होने लगते हैं तभी 'स्वयं-स्फूर्त विकास से पूर्व की स्थिति' उत्पन्न होती है। इस अवस्था में बैंकों, बीमा कम्पनियों, व्यावसायिक संस्थाओं आदि विभिन्न आर्थिक संस्थाओं का आविर्भाव होता है और सम्पूर्ण अर्थ-व्यवस्था या इसके एक बड़े भाग में चेतना जाग्रत हो जाती है। परम्परागत समाज की सभी अथवा अधिकाँश परिस्थितियों में मूलाधार परिवर्तन होने लगते हैं। उत्पादन प्रक्रिया में वाष्प अथवा किसी सीमा तक विद्युत् शक्ति का उपयोग होता है तथा वृहत् स्तर पर उत्पादन होने के कारण विनिमय का क्षेत्र भी विस्तृत हो जाता है। परिवहन को सुगम बनाने लिए सामाजिक ऊपरी लागतों (Social overheads) का निर्माण होने लगता है, कृषि में प्राविधिक क्रान्ति (Technological Revolution) आने लगती है तथा अधिक कुशल उत्पादक और प्राकृतिक साधनों के विक्रय से वित्त प्राप्त करके आयात में वृद्धि की जाने लगती है और जहाँ तक सम्भव हो पूँजी का आयात प्रोत्साहित होता है। इस अवस्था में जो भी परिवर्तन प्रारम्भ होते हैं उनमें विदेशी पूँजी और प्रविधि का योगदान मुख्य रहता है। फिर भी इस अवस्था में आर्थिक विकास का एक सामान्य क्रम नहीं बन पाता। इसके पश्चात् अर्थ-व्यवस्था स्वयं-स्फूर्त (Take-off) की ओर अग्रसर हो जाती है।

3. स्वयं-स्फूर्त-अवस्था—आर्थिक विकास की तृतीय अवस्था को रोस्टो ने स्वयं-स्फूर्त-अवस्था (Stage of Take-off) की संज्ञा दी है। इस अवस्था को परिभाषित करना कठिन है। रेस्टो के अनुसार स्वयं-स्फूर्त एक ऐसी अवस्था है जिसमें विनियोग की दर बढ़ती है और वास्तविक रूप से प्रति व्यक्ति उत्पादन में वृद्धि हो

Scanned by CamScanner

जाती है तथा, इस प्रारम्भिक परिवर्तन से उत्पादन-तकनीकी में महत्त्वपूर्ण परिवर्तन आ जाते हैं और आय का प्रवाह इस तरह होने लगता है कि विनियोगों द्वारा प्रति व्यक्ति उत्पादन की प्रवृत्ति बढ़ती रहती है।

स्वयं-स्फूर्त-अवस्था में आर्थिक विकास कुछ सीमित क्षेत्रों में तीव्र गति से होने लगता है और आधुनिक औद्योगिक तकनीकी का प्रयोग होता है। विकास सामान्य एवं नियमित गति से होने लगता है तथा प्रविधि अथवा पूंजी के लिए देश पर निर्भर नहीं रहता। विकास मार्ग में आने वाली प्राचीन रूढ़ियाँ एवं बाधाएँ समाप्त हो जाती हैं तथा शक्तियाँ अधिक शक्तिशाली होकर विकास में सहयोग प्रदान करती हैं। नई प्रविधियों के माध्यम से उद्योगों और कृषि में उत्पादन वृद्धि का क्रम स्वयमेव चलता रहता है। औद्योगिक विकास की गति कृषि की अपेक्षा सामान्यतः अधिक तीव्र रहती है। देश की अर्थ-व्यवस्था बिना किसी बाहरी सहायता के विकास कर सकती है और उत्पादन को अधिकतम सीमा तक पहुँचाना सम्भव हो जाता है। विनियोग और बचत का राष्ट्रीय आय में अनुपात 10 प्रतिशत या इससे अधिक रहता है। कल्याणकारी उद्योगों का तीव्र गति से विकास होता है और ऐसे संस्थागत ढाँचे का निर्माण होने लगता है जो घरेलू साधनों से विकास के लिए पूंजी एकत्रित करने की क्षमता रखता हो। रोस्टो के अनुसार, विकास की इस अवस्था में शिक्षा तथा प्राविधिक प्रशिक्षण के साथ-साथ रेलों, सड़कों और संचार वाहन के साधनों का भी विकास हो जाता है। प्रो. रोस्टो ने कुछ प्रमुख देशों की स्वयं-स्फूर्त अवस्था की अवधियाँ भी दी हैं—

स्वयं-स्फूर्त-अवस्था

देश	स्वयं-स्फूर्त अवस्था की अवधि	देश	स्वयं-स्फूर्त अवस्था की अवधि
ग्रेट ब्रिटेन	1783-1802	रूस	1870–1914
फ्रांस	1830-1860	कनाडा	1896–1914
बेल्जियम	1833-1860	अर्जेण्टाइना	1935
सं. रा. अमेरिका	1843-1860	टर्की	1937
जर्मनी	1850-1873	भारत	1952
स्वीडन	1868-1890	चीन	1952
जापान	1878-1900		

प्रो. रोस्टो के अनुसार स्वयं-स्फूर्त-अवस्था की अनेक आवश्यक शर्तों में मुख्य ये हैं—राष्ट्रीय आय में जनसंख्या से अधिक वृद्धि, निर्यात में वृद्धि, मूल्यों में स्थायित्व, यातायात एवं शक्ति के साधनों का विस्तार, मानवीय साधनों का उपयोग, सहकारी संस्थापन, पूंजीगत एवं आधारभूत उद्योगों की स्थापना, कृषि-क्षेत्र की उत्पादकता में वृद्धि, कुशल प्रबन्धक और साहसी वर्ग का उदय, सरकारी क्षेत्र में व्यवसाय आदि।

4. परिपक्वता की स्थिति—चौथी अवस्था में अर्थ-व्यवस्था परिपक्वता की ओर उन्मुख होती है। रोस्टो के शब्दों में, "आर्थिक परिपक्वता को परिभाषित करने की विविध पद्धतियाँ हैं, किन्तु इस उद्देश्य के लिए इसे काल के रूप में परिभाषित किया जा सकता है, जब समाज अपने अधिकांश साधनों में आधुनिक तकनीकी को प्रभावपूर्ण

Scanned by CamScanner

ढंग से अपनाए हुए है।" परिपक्वता की स्थिति में विनियोग और बचत की दर 20 प्रतिशत तक पहुँच जाती है। विभिन्न नए उद्योगों की स्थापना हो जाती है और देश की अन्य देशों पर सामान्य निर्भरता समाप्त हो जाती है। आधुनिक प्रविधियों के इच्छित उपयोग द्वारा राष्ट्रीय आय की वृद्धि का क्रम जारी रहता है। जनसंख्या की वृद्धि की अपेक्षा आय वृद्धि की दर अधिक हो जाती है। स्वयं-स्फूर्त-अवस्था के प्रमुख क्षेत्रों की सहायतार्थ नवीन क्षेत्रों को प्रोत्साहन मिलने लगता है। रोस्टो के अनुसार, साधारणतः स्वयं-स्फूर्त-अवस्था से परिपक्वता की स्थिति में पहुँचने में किसी देश को 60 वर्ष लग जाते हैं। परिपक्वता के लिए सभी राष्ट्रों में एक ही समान नियम, विशेषता और प्रकृति का होना जरूरी नहीं है। अमेरिका, ब्रिटेन, स्वीडन, जापान, रूस आदि देशों ने विभिन्न ढंगों से परिपक्वता की अवस्था को प्राप्त किया है।

5. उच्च स्तरीय उपभोग की अवस्था—विकास की अन्तिम अवस्था उच्च स्तरीय उपभोग की अवस्था है। प्रथम तीन अवस्थाओं में जिन वस्तुओं के उपभोग को विलासिता माना जाता है, वही वस्तुएँ विकास की इस अन्तिम अवस्था में सामान्य बन जाती हैं और सर्व-साधारण जनता उनका उपयोग करने की स्थिति में आ जाती है। उच्च स्तरीय अथवा अधिक उपयोग की अवस्था (Stage of Mass Consumption) में औद्योगिक विकास अपनी चरम सीमा पर होने लगता है। अब समाज में रहने वाले पूर्ति की अपेक्षा माँग को अधिक महत्त्व देने लगते हैं। उत्पादन की समस्या से ध्यान हटा कर उपभोग की समस्या और कल्याण की ओर उन्मुख हो जाते हैं। उपभोग में वृद्धि, शक्ति-प्राप्ति के प्रयास, कल्याणकारी राष्ट्र की स्थापना के प्रयास, आदि के द्वारा प्रत्येक राष्ट्र इस अवस्था में आर्थिक कल्याण में वृद्धि करने में जुट जाता है। इससे पूर्व की अवस्थाओं में उत्पादन की वृद्धि को उपयोग की अपेक्षा अधिक प्राथमिकता दी जाती है। पर इस अवस्था में उपभोग की वस्तुओं की प्राप्ति साधारण मूल्यों पर होने लगती है। आर्थिक अवस्था के परिपक्व स्तर के बाद वास्तविक आय में सीमान्त ह्रास का उपयोगिता नियम लागू हो जाता है और अर्थ-व्यवस्था को इस स्थिति से उत्पन्न विभिन्न समस्याओं का सामना करना पड़ता है।

Scanned by CamScanner